बहुभाषी कक्षा
एक संसाधन

उमेश चमोला*

विद्यालय में विभिन्न भाषा, विश्वास, रीति-रिवाज और परंपराओं का निर्वहन करने वाले अभिभावकों के बच्चे पढ़ने आते हैं। वे स्थानीय ज्ञान को अपनी मातृभाषा में प्रचलित शब्दों के माध्यम से ही व्यक्त करते हैं। ये शब्द कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त भाषा से अलग भी हो सकते हैं। इसलिए कक्षा-कक्ष में संचालित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक को उन भाषाओं को भी महत्व देना चाहिए जो स्थानीय समुदाय में प्रयोग की जाती हैं। इससे कक्षा में स्थानीय भाषा पर आधारित ज्ञान की साझेदारी का अवसर प्राप्त होता है। बच्चे इस ज्ञान को अपने विषय की पाठ्यवस्तु से जोड़ने में सफल हो पाते हैं। विषय के प्रति उनका गहरा जुड़ाव हो जाता है। वे विषयगत अवधारणाओं को समझने में भी स्थानीय ज्ञान का प्रयोग करने लगे हैं। इसलिए जिस कक्षा में अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग करने वाले विद्यार्थी होते हैं, वह भाषाई दृष्टि से उतनी ही समृद्ध होती है। इस लेख में बहुभाषी शिक्षण का संबंध भाषा विषय तक ही सीमित नहीं है, अपितु अन्य विषयों को भी अभिन्न अंग बताया गया है। कई बार स्थानीय भाषा में प्रचलित शब्द और शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषा में आए समान शब्दों का अर्थ भिन्न-भिन्न होता है। यहाँ न केवल शिक्षक, अपितु अकादमिक विशेषज्ञ, अनुश्रवणकर्ता और अधिकारियों को भी समुदाय में प्रचलित भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए। तभी सार्थक रूप से बहुभाषी कक्षा एक संसाधन के रूप में प्रयोग की जा सकती है।

विद्यालय लघु समाज का प्रतिनिधित्व करता है। यहाँ विभिन्न भाषा, विश्वास, रीति-रिवाज और परंपराओं का निर्वहन करने वाले अभिभावकों के बच्चे पढ़ने आते हैं। विभिन्न समुदायों में प्रचलित विश्वास, रीति-रिवाज, तीज-त्यौहार, मेले, खानपान, औषधि आदि से संबंधित स्थानीय ज्ञान पर आधारित कई शब्द प्रचलित होते हैं। विद्यालय में पढ़ने वाला बच्चा इन शब्दों के बारे में जानकारी रखता है। वह स्थानीय ज्ञान को इन शब्दों के माध्यम से ही व्यक्त करता है। ये शब्द कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त भाषा से अलग भी हो सकते हैं। इसलिए कक्षा-कक्ष में संचालित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक को उन भाषाओं को भी महत्व देना चाहिए जो स्थानीय समुदाय में प्रयोग की जाती हैं। अतः शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में बहुभाषी कक्षा को एक संसाधन के रूप में प्रयोग करना चाहिए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार,''बहुभाषिकता बच्चे की अस्मिता का निर्माण करती है। इसका संसाधन के रूप में उपयोग, कक्षा-कक्ष की कार्यनीति का हिस्सा बनाना तथा उसे

**शिक्षक-प्रशिक्षक*, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, देहरादून, उत्तराखण्ड 248001

© NCERT not to be republished

लक्ष्य के रूप में रखना रचनात्मक भाषा शिक्षक का कार्य है।'' जो कक्षा जितनी बहुभाषिक होगी अर्थात् जिस कक्षा में भिन्न भाषा-भाषी विद्यार्थी होंगे, वह उतनी ही समृद्ध होगी। बहुभाषी कक्षा को संसाधन के रूप में प्रयोग करने के लिए एक शिक्षक को अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों द्वारा दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली भाषाओं को महत्व देना होगा। इससे उन्हें शिक्षण में अपनापन महसूस होगा। वे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जुड़ाव महसूस करेंगे। वे कक्षा-कक्ष में अध्यापित विषय-वस्तु को उनके द्वारा परिवेश के अवलोकन पर आधारित स्थानीय ज्ञान से जोड़ पाएँगे। एक रचनात्मक शिक्षक शिक्षण के दौरान शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषा के अलावा बच्चों द्वारा दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली भाषाओं को भी महत्व देता है।

इस प्रकार के शिक्षण के लिए वह बच्चों से पूछकर समुदाय में प्रचलित रीति-रिवाज, परंपरा, तीज-त्यौहार, पेड़-पौधे, आस-पास की वस्तुएँ, जंगली और पालतू जंतुओं के स्थानीय भाषा में प्रयुक्त नामों की सूची बना सकता है। वह शिक्षण में आवश्यकतानुसार इन नामों का प्रयोग कर सकता है। वह शिक्षण प्रक्रिया में विशेषकर प्राथमिक स्तर पर बच्चों को स्थानीय भाषा पर आधारित ज्ञान को साझा करने का अवसर प्रदान कर सकता है।

विषयगत अवधारणाओं को स्पष्ट करने में बच्चों के परिवेश की भाषा कितनी महत्वपूर्ण होती है? इस संदर्भ में लेखक अपने शिक्षण अनुभव को साझा करना प्रासंगिक समझता है। लेखक की नियुक्ति विज्ञान शिक्षक के रूप में दूरस्थ क्षेत्र के एक विद्यालय में हुई। लेखक को विज्ञान में चीड़ के बीजों के प्रकीर्णन को समझाना था। लेखक स्पष्ट कर रहा था कि चीड़ के बीजों की विशिष्ट संरचना (बीज के पीछे पूँछ जैसी संरचना) उसे वायु के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में मदद करती है। शिक्षण के दौरान उसने अनुभव किया कि बच्चे चीड़ के रूप में एक अजनबी पेड़ की कल्पना कर रहे हैं। उसने बच्चों से पूछा, ''क्या आपने चीड़ का पेड़ देखा है?'', ''नहीं'', बच्चों ने एक स्वर में कहा। जबकि चीड़ के पेड़ बच्चों के गाँव के पास के जंगल में विद्यालय से ही दिखाई दे रहे थे। उसने बच्चों से उनकी स्थानीय भाषा गढ़वाली में पूछा, ''क्या तुमने कुलें (चीड़ का स्थानीय नाम) का पेड़ देखा है?'', ''हाँ'', सभी बच्चों ने उत्साह से कहा। लेखक ने अब चीड़ के बारे में बच्चों से बातचीत करनी शुरू कर दी। बच्चों ने चीड़ के बारे में कई बातें साझा की, जैसे— चीड़ के पेड़ के तने से लीसा निकलता है। लीसे से तेल बनाया जाता है। इसके बीज पकाकर खाए जाते हैं। लेखक को पता चला कि बच्चों ने चीड़ के बीजों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया है। इसलिए वे चीड़ के बीज की संरचना से भी परिचित हैं।

बहुभाषी शिक्षण का मसला भाषा शिक्षण तक ही सीमित नहीं है, अपितु अन्य विषयों के शिक्षण से भी इसका सीधा संबंध है। इस संबंध में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में वर्णित यह दृष्टिकोण प्रासंगिक है— 'विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की ही कक्षा होती हैं। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चिन्तन करना और उसके बारे में चर्चा करना।'

ऐसा करना तभी संभव है जब इन विषयों के शिक्षण में भी भाषा की विविधता के प्रयोग को महत्व दिया जाए। किसी विषय में कई बार बच्चों के द्वारा

दैनिक जीवन में प्रयोग की जाने वाली भाषा और शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयोग की जाने वाली भाषा के एक ही जैसे शब्दों के अलग-अलग अर्थ होते हैं। ऐसी स्थिति में विषयगत अवधारणाओं को समझने में बच्चों को कठिनाई महसूस होती है। इसे दो वास्तविक शिक्षण अनुभवों के दृष्टांत से स्पष्ट किया जा रहा है —

- **दृष्टांत एक**— उत्तराखण्ड के गढ़वाल मण्डल के एक गाँव के दूरस्थ विद्यालय में एक विज्ञान शिक्षक 'गति' विषय पर शिक्षण कर रहे थे। उन्होंने बच्चों से पूछा, ''क्या तुम गति के बारे में जानते हो?'' एक बच्चा तपाक से बोला, ''जी, गति मनुष्य में मरने के बाद की जाती है।'' बच्चे के परिवेश की भाषा में गति शब्द का अर्थ दाह संस्कार से है। बच्चे का उत्तर उसके अपने परिवेश के अवलोकन पर आधारित है। इसे गलत नहीं ठहराया जा सकता। यहाँ पर शिक्षक का कर्तव्य है कि वह बच्चे की स्थानीय भाषा को सम्मान देते हुए बताए कि गति का मतलब जो वह बता रहा है; वह भी सही है, किंतु यहाँ पर गति से तात्पर्य दूसरे संदर्भों में है।
- **दृष्टांत दो**— गढ़वाल के एक विद्यालय में बच्चों से पूछा गया, ''मैया! मोरि मैं नहिं माखन खायो'' का अर्थ बताओ। एक बच्चे ने उत्तर दिया, ''हे माता! मुझे खिड़की में मक्खी ने नहीं खाया।'' स्थानीय गढ़वाली भाषा में मोरि का अर्थ 'खिड़की' और माखन का अर्थ 'मक्खी ने' है। कक्षा के अन्य बच्चे जिन्हें इस काव्यांश का संदर्भित अर्थ पता है, उस बच्चे का मज़ाक उड़ा सकते हैं। एक शिक्षक द्वारा अनायास ही बच्चों द्वारा किए उपहास में सम्मिलित होने की संभावना भी हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक को बच्चे को समझाना होगा कि उसने वाक्यांश का जो अर्थ बताया; वह स्थानीय भाषा के परिप्रेक्ष्य में सही है, किंतु जो पाठ पढ़ाया जा रहा है, वहाँ पर उसका उत्तर भिन्न है।

उत्तराखण्ड के कुछ विद्यालयों में नेपाल और बिहार से आए दिहाड़ी और मज़दूरी करने वाले अभिभावकों के बच्चे भी पढ़ने आते हैं। इनके द्वारा दैनिक जीवन में बोली जाने वाली भाषा अन्य बच्चों की भाषा से अलग होती है। एक रचनात्मक शिक्षक शिक्षण में इन बच्चों की भाषा को भी सम्मान और महत्व देता है जिससे वे कक्षा शिक्षण में अपने को अलग-थलग महसूस न कर सकें, वे अपनी भाषा के साथ-साथ दूसरी भाषाएँ भी सीख सकें। कई अध्ययनों से पता चला है कि द्विभाषी क्षमता संज्ञानात्मक वृद्धि, सामाजिक सहिष्णुता, विस्तृत चिंतन और बौद्धिक उपलब्धियों के स्तर को बढ़ा देती है (*एन.सी.एफ 2005*, पृष्ठ संख्या 42)।

बहुभाषी कक्षा का तात्पर्य ऐसी कक्षा से नहीं है जिसमें शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयुक्त भाषा (उदाहरण के लिए, हिंदी) के साथ-साथ स्थानीय बोलचाल की भाषा को ही महत्व दिया जाता है, अपितु ऐसी कक्षा से भी है जहाँ इन भाषाओं के अलावा द्वितीय भाषा, जैसे— अंग्रेज़ी को भी स्थान दिया जाता है। भारत के बहुभाषी समाज में एक वैश्विक भाषा के रूप में अंग्रेज़ी को भी सम्मान प्राप्त है। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण के कारण बच्चों की स्थानीय भाषा की उपेक्षा न हो। प्रारंभिक स्तर पर विषयगत अवधारणाओं को समझने और स्पष्ट करने में द्वितीय भाषा की तुलना में मातृभाषा अधिक प्रभावशाली

© NCERT not to be republished

सिद्ध होती है। बहुभाषी कक्षा के शिक्षक और राज्य तथा ज़िला/विकासखण्ड स्तरीय अधिकारियों, अकादमिक विशेषज्ञों और अनुश्रवणकर्ताओं को अंग्रेज़ी के साथ-साथ उस क्षेत्र में प्रचलित स्थानीय भाषा की आधारभूत जानकारी का होना आवश्यक है। इसे एक दृष्टांत के माध्यम से समझा जा सकता है। एक बार किसी विद्यालय में अनुश्रवण करने वाले विशेषज्ञ व अधिकारी ने बच्चों से पूछा, ''अंग्रेज़ी में संज्ञा को क्या कहते हैं?'', एक बच्चे ने कुछ झिझकते हुए कहा, ''जी! नि ओना।'' विशेषज्ञ ने समझा कि बच्चा नाउन को त्रुटिवश 'नि ओन' कह रहा है। जबकि स्थानीय भाषा गढ़वाली-कुमाउंनी में इसका अर्थ 'मुझे नहीं आता है' होता है। इसी प्रकार एक बच्चे से पूछा गया, ''सर्वनाम किसे कहते हैं?'' बच्चे को सर्वनाम की आधी परिभाषा याद थी। बच्चे ने कहा, ''जी! पूरु नि ओन'' (स्थानीय भाषा में इसका अर्थ है मुझे पूरा नहीं आता है।)। पूछने वाले विशेषज्ञ को स्थानीय भाषा की जानकारी नहीं थी। उसने समझा कि बच्चा प्रोनाउन को गलती से 'पूरु नि ओन' कह रहा है।

अतः बहुभाषी कक्षा सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसा संसाधन है जिसकी तुलना किसी भी अन्य राष्ट्रीय संसाधन से की जा सकती है (एन.सी.एफ. 2005)। बहुभाषी कक्षा को संसाधन के रूप में तभी प्रयोग किया जा सकता है जब शिक्षक इसे अपनी शिक्षण योजना में सम्मिलित करे और शिक्षण योजना सोच-विचार कर तैयार की जाए। विभिन्न शैक्षिक अनुसंधानों से सिद्ध हो चुका है कि विद्यार्थी उस भाषा के माध्यम से सहज और प्रभावी ढंग से सीखता है, जिसे वह अच्छी तरह जानता हो और शिक्षक उस भाषा में बेहतर शिक्षण कर पाता है जिसमें उसकी दक्षता हो (अग्निहोत्री, 2007)। यदि बच्चों द्वारा बोली/समझी जाने वाली भाषा जो कि प्राय: उनकी मातृभाषा होती है और शिक्षक द्वारा शिक्षण में प्रयोग की जाने वाली भाषा भिन्न हो तो ऐसी स्थिति में उचित शैक्षणिक परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। इसलिए अपेक्षित शैक्षणिक परिणामों के लिए आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों द्वारा प्रयुक्त भाषा में भी दक्षता प्राप्त करें और अपने शिक्षण में उसे महत्व दें।

निष्कर्ष

बहुभाषी कक्षा शिक्षण स्थानीय भाषा पर आधारित ज्ञान को साझा करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे बच्चे उस ज्ञान का प्रयोग विषयगत अवधारणाओं को समझने में करते हैं। बहुभाषी शिक्षण, भाषा शिक्षण तक ही सीमित नहीं है, अपितु अन्य विषयों के शिक्षण में भी यह अधिगम संसाधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इसलिए शिक्षक को स्थानीय भाषा का ज्ञान अर्जित कर बच्चों को विद्यालय में पढ़ाना चाहिए।

संदर्भ

अग्निहोत्री, आर. के. 2007. आइडेंडिटी एंड मल्टीलिंगुअलिटी — द केस ऑफ़ इंडिया. संपादन में सुई, ए. और टोलेफ़सन, जें. डब्ल्यू. *लैंग्वेज पॉलिसी, कल्चर एंड आइडेंटिटी इन एशियन कॉन्टैक्स्ट*. रोटलेज, न्यूयॉर्क.

मल्टीलिंगुअल एजुकेशन रिसर्च. http://blog.britishcouncil.org.in/टुवर्ड ए मल्टीलिंगुअल एजुकेशन रिसर्च पार्टनरशिप फ़ॉर इंडिया.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. पृ. 42. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished